११४. मानव ही अखण्डता, सार्वभौमता के साथ सुखी होना सहज है

१४-१२-२०१३

मानव में अर्थात मानव जात में दूसरा भाषा से ज्ञानी, विज्ञानी, अज्ञानी तीनों के साथ सामरस्यता को पाने के लिये, दूसरा विधि से सहृदयता को पाने के लिये, तीसरा विधि से एक साथ जीने के लिये, चौथा विधि से एक साथ जागृत होने के लिये अर्थात पाँचवाँ जागृति को प्रमाणित करने के लिये अखण्डता, सार्वभौमता ही एकमात्र आधार है | मानव जात एक होने का तथ्य को सटीक समझने पर मानव में अखण्डता पर विश्वास होता है | दूसरा विधि से समझदार होने से, समझदारी का मेजॉरिटि (बहुमत) होने से अर्थात अधिक संख्या में लोग समझदार होने से सार्वभौमता होना स्वाभाविक है | अखण्डता, सार्वभौमता की अपेक्षा विगत, सुदूर विगत से है ही |

मानव जात अपने परिश्रम से सुख पाने की अथवा सुखी होने की अपेक्षा व्यक्त किया है | यह मानव का अपूर्व लक्ष्य है | सभी सुखी होना चाहते हैं | रास्ता न होने के कारण अभी तक सफल नहीं हुए | रास्ता एक ही है, वह विकल्प ही है | विकल्प ही अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था का पहल करता है | अभी तक मानव जाति, मत, संप्रदाय, भाषा के आधार पर, विशेषकर अखण्डता, सार्वभौमता को खोजता रहा; जबकि विकल्प ही इसको स्पष्ट किया है | अखण्डता, मानव जात एक होने का स्थिति में; सार्वभौमता, अखण्ड समाज व्यवस्था के रूप में प्रस्तुत किया | विकल्प विधि से ही ये दोनों भाग को प्रमाणित कर सकते हैं | दूसरा कोई विधि नहीं है | विकल्प विधि ही सह-अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन है | सह-अस्तित्व ही अखण्डता, सार्वभौमता का आधार है | अस्तित्व स्वयं मानव केंद्रित है | मानव ज्ञानावस्था में होने के आधार पर मानव केंद्रित होना स्वाभाविक रहा | इस क्रम में मानव का मर्यादाएं स्पष्ट हो जाता है |

विकसित चेतना विधि से मानव मर्यादा समझ में आता है | मानव मर्यादा प्रमाण के आधार पर होता है | प्रमाण तीन ही होता है | सह-अस्तित्व में अनुभव प्रमाण, अनुभव प्रमाण सम्मत विचार प्रमाण और कार्य-व्यवहार प्रमाण | इसका स्वरूप को देखना चाहते हैं अर्थात कार्य-व्यवहार रूप में देखना है- इसे स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य-व्यवहार के रूप में देखा जा सकता है | यह जागृत चेतना का विचार प्रमाण है | यह विचार सम्मत होता है | सह-अस्तित्व में अनुभव प्राकृतिक है | इसे तीस वर्ष का घोर अभ्यास से पाया गया है | तीस वर्ष अभ्यास किया, अभ्यास का फलन को मानव को अर्पितकरने में तीस वर्ष लगा | यही अमरकंटक का विशेष प्रयास है | अमरकंटक में रहने का यही सफल कार्यक्रम है | इस क्रम में सहज रूप में मानव चेतना होना समझ में आता है | मानव विकसित चेतना विधि से ही प्रमाणित हो पाता है |

अखण्डता, सार्वभौमता रूप में प्रमाणित हो पाता है | इसको भले प्रकार से हर व्यक्ति प्रयोग कर सकता है | इस क्रम में मानव चेतना होना समझ में आता है | विकसित चेतना ही मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना के रूप में व्यक्त होता है | चेतना विकास ही प्रधान रूप है | जीव चेतना से मानव चेतना में परिवर्तन होना ही इसका मूल कारण है | इस क्रम में मानवीयतापूर्ण मानव अपना मर्यादाओं को पहचान सकता है | देव मानव अपने मर्यादाओं को पहचानता है | उससे ही न्यायिकता, समाधान दोनों जीने में, आचरण में आता है | अनुभव होता है तो प्रमाणित होता है | इस प्रकार से तीन प्रमाण होता है | अनुभव प्रमाण, अनुभव सम्मत विचार प्रमाण, अनुभव सम्मत विचार के अनुरूप कार्य-व्यवहार प्रमाण | इस ढंग से तीनों

चेतना अनुभव मूलक विधि से प्रमाणित होना देखा गया है | कार्य को हम मानव, मनुष्येतर प्रकृति के साथ करते हैं | विशेषकर कार्य के साथ व्यवहार को मानव के साथ किया जाता है | मानव के साथ न्याय, मानवेतर प्रकृति के साथ समाधान के रूप में होना पाया गया है | मानवेतर प्रकृति के साथ समाधान का मतलब सर्वतोमुखी समाधान ही है | सर्वतोमुखी समाधान रूप में हम जब प्रमाणित हो पाते हैं तब विकसित चेतना ही होता है | इस क्रम में मानव कार्य-व्यवहार प्रमाण, विचार सम्मत होना आवश्यक रहता है | कार्य-व्यवहार के मूल में विचार रहता ही है | विचार के अभाव में कोई कार्य-व्यवहार होता ही नहीं | विचार अनुभव सम्मत होता है | अनुभव अस्तित्व मूलक होता है अथवा अस्तित्व में अनुभव सहज रूप में होता है | इस विधि से हम विकसित चेतना का उपयोग कर सकते हैं | चेतना अपनी जगह में आदिकाल से अनंत काल तक रहता ही है | इस क्रम में जीने से धरती संतुलित रहना स्वाभाविक है | धरती संतुलित रहने के क्रम में कितना समय तक रहेंगे? जब तक संतुलित रहेंगे |

अभी तक जो मानव इस धरती पर जो कुछ भी किया, उसके फलस्वरूप में धरती निरर्थक होना बताया जा रहा है | चन्द्रमा में, मंगल में खाली स्थली में निवास करने के लिये कहते हैं विज्ञान विधि से | इस बारे में हमारा सोच इस प्रकार से है कि यह व्यापार विधि से ऐसा कहा जाता है | व्यापार सार्थक विधि नहीं है | व्यापार सदा ही कलंकित रहता है क्योंकि लाभ की कल्पना के बिना व्यापार होता नहीं | कितना लाभ होगा, कोई सीमा नहीं | इस कारण से कहीं निश्चयन होना सम्भव नहीं है | मानव का उत्पादन, मानव का आचरण यही मुख्य रूप में सदा-सदा के लिये कार्यकारी है | कार्यकारी का मतलब है- जो आधार है वो निरंतर बना रहता है | विकसित चेतना सदा के लिये बना रहता है | यही विकल्प है |

विकसित चेतना ही मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना के रूप के व्यक्त होता है | नामकरण मानव का दिया हुआ है | मैं भी मानव जात का एक इकाई हूँ | मेरा नाम दिया हुआ है | मेरे द्वारा नाम दिया गया है | सर्वमानव नाम देने में प्रेरित है | अथवा दूसरा भाषा में हर मानव नामकरण के लिये अधिकारी है-वस्तु से लेकर मानव तक | हर वस्तु का नामकरण देने वाला मानव ही है | दूसरा कोई नामकरण देता नहीं | और कोई देता नहीं का मतलब जीव संसार, वनस्पति संसार, पदार्थ संसार | ये तीनों संसार नाम देने के योग्य नहीं हैं | नाम देना केवल मानव से ही होता है | इस क्रम में हम सोच सकते हैं कि सार्थक रूप में नाम देना एक आवश्यकता है | चेतना ही विकसित होकर मानव को यह उद्देश्य बताता है | मानव अभी ज्ञानी, विज्ञानी अज्ञानी के रूप में गण्य है | यदि विकसित चेतना सम्मत मानव जाति आचरण में प्रमाणित कर पाता है, उस स्थिति में मानव जात एक होना पाया जाता है |

विकसित चेतना का मतलब मानव जागृति है | मानव जागृति ही अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था को पहचान पाता है | अखण्ड समाज मानव जात शाकाहारी होने के आधार पर है | सार्वभौमता सर्वमानव सुखी होने के आधार पर है | सर्वमानव सुखी होने के आधार पर ही सार्वभौमता सिद्ध होता है | सार्वभौमता विधि से ही चारों अवस्था संतुलित रहना पाया जाता है | इसके लिये विचार प्रमाण में यह स्पष्ट है | विचार प्रमाण में नियम, नियंत्रण, संतुलन रूप में मनुष्येतर प्रकृति को सार्थक होना पाया गया है | मानव जात सार्थक होने के लिये यही अखण्डता का आधार है |

अखण्ड समाज व्यवस्था ही सार्वभौमता को प्रमाणित करता है | सार्वभौमता ही चारों अवस्था में संतुलन को प्राप्त करता है | इस विधि से हमारे सुखी होने का रास्ता बनता है | सुखी होना हर व्यक्ति चाहता है | सुखी होने के लिये समझदारी ही एकमात्र व्यवस्था है | एकमात्र व्यवस्था ही सार्वभौमता है | यह विकसित चेतना विधि से ही उपलब्ध होता है | मानव अपने कृतकृत्यता को प्रमाणित करने के क्रम में जागृत होना आवश्यक है | कर्म विधि से कृतकृत्यता सिद्ध होता है | कर्म विधि दो

प्रकार से है- व्यवस्था विधि, आचरण विधि | आचरण विधि में सर्वप्रथम नित्य उत्सव के रूप में मानवत्व का प्रमाण होता है | इसी में समाधान, समृद्धि प्रमाणित हो जाता है | हमारा कामना से लेकर कार्य तक समाधान ही हमारा उद्देश्य बनता है | ऐसा उद्देश्य सार्थक होने के लिये विकसित चेतना ही एकमात्र रास्ता है | इस क्रम में मानव यदि प्रवृत्त होता है, तब इस धरती पर अनादि काल तक मानव निवास कर सकता है | चन्द्रमा पर अपने को बर्बाद करने के लिये जाएगा नहीं, न मंगल पर जाएगा | चन्द्रमा को बेचकर के व्यापार विधि से धनी हो गया देश में मानव; अब मंगल को बेचना है |

शुरुआत है, इस क्रम में व्यापार विधि को बढ़ावा देने की विधि बनी | इसमें मानव जात आश्वस्त नहीं हुआ, सुखी नहीं हुआ | इसी क्रम में सुखी होने के आधार पर विकसित चेतना को प्रस्तावित किया जा रहा है | हर मानव अर्थात ज्ञानी, विज्ञानी, अज्ञानी तीनों प्रयोग कर सकते हैं,आचरण कर सकते हैं, प्रमाणित कर सकते हैं |

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

- ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक | मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | दिव्य पथ संस्थान(भजनाश्रम) | अमरकंटक | जिला-अनूपपुर(म. प्र.)